C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी B

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड क

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2´4) (1×1) = 9

कौशल देश के वृद्ध राजा के चार पुत्र थे। उन्हें यह चिन्ता सताने लगी थी कि राज्य का उत्तराधिकारी किसे बनाया जाए? सोच-विचार के बाद अपने चारों पुत्रों को बुलाकर राजा ने कहा - "तुम चारों में से जो सबसे बड़े धर्मात्मा को मेरे पास लेकर आएगा वही राज्य का स्वामी बनेगा।" तत्पश्चात चारों राजकुमार अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े।

कुछ दिनों बाद बड़ा पुत्र अपने साथ महाजन को लेकर आया और राजा से बोला - "ये महाजन लाखों रुपयों का दान कर चुके हैं, अनेक मन्दिर व धर्मशालाएँ बनवा चुके हैं तथा साधु-सन्तों और ब्राह्मणों को भोजन कराने के उपरान्त ही ये भोजन करते हैं। इनसे बड़ा धर्मात्मा कौन होगा?

"हाँ, वास्तव में ये धर्मात्मा हैं।" राजा ने कहा तथा सत्कारपूर्वक विदा किया।

इसके बाद दूसरा पुत्र एक कृशकाय ब्राह्मण को लेकर आया और राजा से बोला - "ये ब्राह्मण देवता चारों धामों की यात्रा कर आए हैं, कोई तामसी वृत्ति इन्हें छू नहीं गई है। इनसे बढ़कर कोई धर्मात्मा नहीं है।"

राजा ब्राह्मण के समक्ष नतमस्तक हुए और दान-दक्षिणा देकर बोले - "इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये एक श्रेष्ठ धर्मात्मा हैं।"

तभी तीसरा पुत्र एक साधु को लेकर पहुँचा और बोला - "ये साधु महाराज सप्ताह में केवल एक बार दूध पीकर रहते हैं। भयंकर सर्दी में जल में खड़े रहते हैं और गर्मी में पंचाग्नि तापते हैं। ये सबसे बड़े धर्मात्मा हैं।"

राजा ने साधु को प्रणाम किया और कहा - "निश्चय ही ये एक उत्तम साधु हैं।" साधु महाराज राजा को आशीर्वाद देकर विदा हुए।

अन्त में सबसे छोटा पुत्र एक निर्धन किसान के साथ आया। किसान दूर से ही भय के मारे हाथ जोड़ता चला आ रहा था। तीनों भाई छोटे भाई की मूर्खता पर ठहाका लगाकर हँस पड़े। छोटा पुत्र बोला - "एक कुत्ते के शरीर पर लगे घाव को यह आदमी धो रहा था। पता नहीं कि यह धर्मात्मा है या नहीं। अब आप ही इससे पूछ लीजिए।"

राजा ने पूछा - "तुम क्या धर्म-कर्म करते हो?" किसान डरते-डरते बोला - "मैं अनपढ़ हूँ, धर्म किसे कहते हैं, यह मैं नहीं जनता। कोई बीमार होता है तो सेवा कर देता हूँ। कोई माँगता है तो मुट्ठी भर अन्न अवश्य दे देता हूँ।"

राजा ने कहा - "यह किसान ही सबसे बड़ा धर्मात्मा है।" राजा की बात सुनकर तीनों बड़े लड़के एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। राजा ने पुनः कहा - "तीर्थयात्रा करना, भगवत आराधना में लीन रहना, दान-पुण्य करना और जप-तप करना भी धर्म है किन्तु बिना किसी स्वार्थ के किसी दीन-दुःखी और कष्ट में पड़े हुए प्राणी की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। जो परोपकार करता है, वही सबसे बड़ा धर्मात्मा है।"

1. राजा को क्या चिन्ता थी? उसने अपने पुत्रों को बुलाकर क्या कहा?
2. बड़े पुत्र की दृष्टि में सबसे बड़ा धर्मात्मा कौन था और उसका क्या कारण था?
3. साधु किसके साथ आया था? उसका परिचय किस प्रकार दिया गया?
4. किसान को राजा के सामने कौन लाया था और क्यों? राजा ने किसान को ही सबसे बड़ा धर्मात्मा क्यों
   कहा?
5. प्रस्तुत गद्यांश से क्या शिक्षा मिलती है?

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2x3=6

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख-दुख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है।

कब फूटा गिरि के अंतर से? किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बह कर आया समतल में अपने को खींचे?

निर्झर में गति है, जीवन है, वह आगे बढ़ता जाता है!
धुन एक सिर्फ़ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।

बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता,
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।

लहरें उठती हैं, गिरती हैं; नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।

निर्झर कहता है, बढ़े चलो! देखो मत पीछे मुड़ कर!
यौवन कहता है, बढ़े चलो! सोचो मत होगा क्या चल कर?

चलना है, केवल चलना है ! जीवन चलता ही रहता है !
रुक जाना है मर जाना ही, निर्झर यह झड़ कर कहता है !

'जीवन का झरना'
कवि - आरसी प्रसाद सिंह

1. निर्झर के मार्ग में कौन-कौन-सी बाधाएँ आती हैं? वह उनका किस प्रकार सामना करता है?
2. नाविक कब पछताता है और क्यों?
3. झरने को किस बात की लगन है? कवि ने निर्झर और नाविक में क्या अंतर बताया है?

खण्ड ख

प्र. 3. मिश्र वाक्य किसे कहते है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। 1+1=2

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x3=3

(क) छात्र शिक्षक के यहाँ जाता है और हिंदी पढ़ता है। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए)

(ख) रात होते ही आकाश में तारों का मेला लग गया। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ग) मीरा ने कहानी सुनाई। सीमा रो पड़ी। (सरल वाक्य में बदलिए)

प्र. 5. (क) निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम लिखिए : 1+1=2

यथाशक्ति, ऋण से मुक्त।

(ख) निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :1+1=2

अनंत, अठन्नी

प्र. 6. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए : 1x4=4

(क) यह आदमी क्या चाहते हैं?

(ख) हम परस्पर आपस में लड़ते हैं।

(ग) एक गीतों की पुस्तक चाहिए।

(घ) हम आपसे कहे थे।

प्र. 7. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए : 1+1=2

1. आँख लगना
2. घुटने टेकना

खण्ड ग

प्र. 8 अ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2+2+1=5

(क) बाजार के चौराहे पर खामोशी क्यों थी?

(ख) तताँरा ने वामीरो से क्या याचना की?

(ग) प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट किसे कहते हैं?

प्र. 8 ब 'गिन्नी का सोना' के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि 'आदर्शवादिता' और 'व्यावहारिकता' इनमें से जीवन में किसका महत्त्व है? 5

प्र. 9 अ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2+2+1=5

(क) बिहारी कवि ने सभी की उपस्थिति में भी कैसे बात की जा सकती है, इसका वर्णन किस प्रकार किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) कंपनी बाग में रखी तोप क्या सीख देती है?

(ग) कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है?

प्र. 9 ब 'सहस दृग-सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा? 5

प्र. 10. टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। बताइए – ज़हीन होने के बावजूद भी कक्षा में दो बार फ़ेल होने के क्या कारण थे? 5

खण्ड घ

प्र. 11. दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए : 5

- मित्रता
- खेलों का महत्त्व तथा खेलों में फैला भ्रष्टाचार

प्र.12. छात्रावास में रहने वाली अपनी छोटी बहन को फैशन की ओर अधिक रुझान न रख, ध्यानपूर्वक पढ़ाई करने की सीख देते हुए पत्र लिखिए। 5

प्र. 13. आपकी स्कूल ने उदयपुर की सैर का आयोजन किया है। विद्यार्थियों तक इसकी जानकारी देने के लिए एक सूचना-पत्र लिखिए। 5

प्र. 14. मकान मालिक और किरायेदार के बीच हो रहा संवाद लिखिए। 5

प्र. 15. निम्नलिखित विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए : 5
गर्मी में इस्तमाल होनेवाले टेलकम पाउडर का विज्ञापन तैयार कीजिए।

C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी B

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड क

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2´4) (1×1) = 9

कौशल देश के वृद्ध राजा के चार पुत्र थे। उन्हें यह चिन्ता सताने लगी थी कि राज्य का उत्तराधिकारी किसे बनाया जाए? सोच-विचार के बाद अपने चारों पुत्रों को बुलाकर राजा ने कहा - "तुम चारों में से जो सबसे बड़े धर्मात्मा को मेरे पास लेकर आएगा वही राज्य का स्वामी बनेगा।" तत्पश्चात चारों राजकुमार अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े।

कुछ दिनों बाद बड़ा पुत्र अपने साथ महाजन को लेकर आया और राजा से बोला - "ये महाजन लाखों रुपयों का दान कर चुके हैं, अनेक मन्दिर व धर्मशालाएँ बनवा चुके हैं तथा साधु-सन्तों और ब्राह्मणों को भोजन कराने के उपरान्त ही ये भोजन करते हैं। इनसे बड़ा धर्मात्मा कौन होगा?

"हाँ, वास्तव में ये धर्मात्मा हैं।" राजा ने कहा तथा सत्कारपूर्वक विदा किया।

इसके बाद दूसरा पुत्र एक कृशकाय ब्राह्मण को लेकर आया और राजा से बोला - "ये ब्राह्मण देवता चारों धामों की यात्रा कर आए हैं, कोई तामसी वृत्ति इन्हें छू नहीं गई है। इनसे बढ़कर कोई धर्मात्मा नहीं है।"

राजा ब्राह्मण के समक्ष नतमस्तक हुए और दान-दक्षिणा देकर बोले - "इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये एक श्रेष्ठ धर्मात्मा हैं।"

तभी तीसरा पुत्र एक साधु को लेकर पहुँचा और बोला - "ये साधु महाराज सप्ताह में केवल एक बार दूध पीकर रहते हैं। भयंकर सर्दी में जल में खड़े रहते हैं और गर्मी में पंचाग्नि तापते हैं। ये सबसे बड़े धर्मात्मा हैं।"

राजा ने साधु को प्रणाम किया और कहा - "निश्चय ही ये एक उत्तम साधु हैं।" साधु महाराज राजा को आशीर्वाद देकर विदा हुए।

अन्त में सबसे छोटा पुत्र एक निर्धन किसान के साथ आया। किसान दूर से ही भय के मारे हाथ जोड़ता चला आ रहा था। तीनों भाई छोटे भाई की मूर्खता पर ठहाका लगाकर हँस पड़े। छोटा पुत्र बोला - "एक कुत्ते के शरीर पर लगे घाव को यह आदमी धो रहा था। पता नहीं कि यह धर्मात्मा है या नहीं। अब आप ही इससे पूछ लीजिए।"

राजा ने पूछा - "तुम क्या धर्म-कर्म करते हो?" किसान डरते-डरते बोला - "मैं अनपढ़ हूँ, धर्म किसे कहते हैं, यह मैं नहीं जनता। कोई बीमार होता है तो सेवा कर देता हूँ। कोई माँगता है तो मुट्ठी भर अन्न अवश्य दे देता हूँ।"

राजा ने कहा - "यह किसान ही सबसे बड़ा धर्मात्मा है।" राजा की बात सुनकर तीनों बड़े लड़के एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। राजा ने पुनः कहा - "तीर्थयात्रा करना, भगवत आराधना में लीन रहना, दान-पुण्य करना और जप-तप करना भी धर्म है किन्तु बिना किसी स्वार्थ के किसी दीन-दुःखी और कष्ट में पड़े हुए प्राणी की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। जो परोपकार करता है, वही सबसे बड़ा धर्मात्मा है।"

1. राजा को क्या चिन्ता थी? उसने अपने पुत्रों को बुलाकर क्या कहा?

   उत्तर : कौशल देश के वृद्ध राजा के चार पुत्र थे उन्हें यह चिंता सताने लगी थी कि चारों पुत्रों में से किसे राज्य का उत्तराधिकारी बनाया जाए काफ़ी सोच-विचार के बाद राजा ने अपने पुत्रों को बुलाया और कहा कि उन चारों में से जो कोई सबसे बड़े धर्मात्मा को उनके पास लाएगा उसे राज्य का उत्तराधिकारी बना दिया जाएगा।

2. बड़े पुत्र की दृष्टि में सबसे बड़ा धर्मात्मा कौन था और उसका क्या कारण था?

उत्तर : बड़ा पुत्र अपने साथ एक महाजन को ले आया उसके अनुसार वह महाजन सबसे बड़ा धर्मात्मा था क्योंकि वह लाखों रूपए दान कर चुके थे, अनेक मंदिर और धर्मशालाओं का निर्माण कर चुके थे और साधु-संतों को भोजन करवाने के उपरान्त ही वे स्वयं भोजन करते थे।

3. साधु किसके साथ आया था? उसका परिचय किस प्रकार दिया गया?

उत्तर : साधु राजा के तीसरे बेटे के साथ आया था। उनका परिचय इस प्रकार दिया गया कि वे सप्ताह में एक बार दूध पीकर रहते हैं, भयंकर सर्दी में जल में खड़े रहते हैं और गर्मी में पंचाग्नि तापते हैं।

4. किसान को राजा के सामने कौन लाया था और क्यों? राजा ने किसान को ही सबसे बड़ा धर्मात्मा क्यों
कहा?

उत्तर : किसान को राजा के सामने उनका सबसे छोटा पुत्र धर्मात्मा के रूप में लाया। राजा ने उस किसान को धर्मात्मा मानने का कारण यह था कि वह निस्वार्थ भाव से दीन-दुखी की मदद करता था और राजा के अनुसार परोपकार करना ही सबसे बड़ा धर्म था।

5. प्रस्तुत गद्यांश से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर : इस गद्यांश से सच्चे धर्म की शिक्षा मिलती है। धर्म तीर्थयात्रा करने, दान-पुण्य करने या जप-तप करने में नहीं होता है। सच्चा धर्म तो निस्वार्थ भाव से दीन-दुखियों की सेवा और परोपकार में होता है।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2x3=6

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख-दुख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है।

कब फूटा गिरि के अंतर से? किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बह कर आया समतल में अपने को खींचे?

निर्झर में गति है, जीवन है, वह आगे बढ़ता जाता है!
धुन एक सिर्फ़ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।

बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता,
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।

लहरें उठती हैं, गिरती हैं; नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।

निर्झर कहता है, बढ़े चलो! देखो मत पीछे मुड़ कर!
यौवन कहता है, बढ़े चलो! सोचो मत होगा क्या चल कर?

चलना है, केवल चलना है ! जीवन चलता ही रहता है !
रुक जाना है मर जाना ही, निर्झर यह झड़ कर कहता है !

'जीवन का झरना'
कवि - आरसी प्रसाद सिंह

1. निर्झर के मार्ग में कौन-कौन-सी बाधाएँ आती हैं? वह उनका किस प्रकार सामना करता है?

   उत्तर : निर्झर अर्थात् झरने के जीवन में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। जैसे-उसके रास्ते में पेड़, पर्वत, पत्थर आदि आते हैं, लेकिन वह उन सब बाधाओं को पार करता हुआ आगे बढ़ता जाता है।

2. नाविक कब पछताता है और क्यों?

उत्तर : नदी में उठती ऊँची लहरों को देखकर नाविक निराश व डरकर नदी के किनारे खड़ा रहता है और नदी में नाव डालने की हिम्मत नहीं जुटा पाता। तब किनारे पर खड़े होकर पछताता है।

3. झरने को किस बात की लगन है? कवि ने निर्झर और नाविक में क्या अंतर बताया है?

उत्तर : झरने को निरंतर आगे बढ़ने की लगन है। नाविक मार्ग में आने वाली बाधाओं से डरकर हार मान लेता है। लेकिन झरना मार्ग में आई सभी बाधाओं से लड़ता हुआ आगे-ही आगे बढ़ता जाता है।

खण्ड ख

प्र. 3. मिश्र वाक्य किसे कहते है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। 1+1=2

उत्तर : जिस वाक्य में एक मुख्य वाक्य और उसके आश्रित एक या एक से अधिक उपवाक्य हो उसे मिश्र वाक्य कहते हैं।

उदाहरण : सफल वही होता है जो दिन-रात मेहनत करता है।

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x3=3

(क) छात्र शिक्षक के यहाँ जाता है और हिंदी पढ़ता है। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए)

उत्तर : संयुक्त वाक्य

(ख) रात होते ही आकाश में तारों का मेला लग गया। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जैसे ही रात हुई वैसे ही आकाश में तारों का मेला लग गया।

(ग) मीरा ने कहानी सुनाई। सीमा रो पड़ी। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : मीरा की कहानी सुनकर सीमा रो पड़ी।

प्र. 5. (क) निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम लिखिए : 1+1=2

यथाशक्ति, ऋण से मुक्त।

उत्तर : यथाशक्ति - यथा - शक्ति के अनुसार - अव्ययीभाव समास

ऋण से मुक्त - ऋणमुक्त-अपादान तत्पुरुष

(ख) निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :1+1=2

अनंत, अठन्नी

उत्तर : अनंत - न अंत - नञ तत्पुरुष समास

अठन्नी - आठ आनों का समूह - द्विगु समास

प्र. 6. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए : 1x4=4

(क) यह आदमी क्या चाहते हैं?

उत्तर : ये आदमी क्या चाहते हैं?

(ख) हम परस्पर आपस में लड़ते हैं।

उत्तर : हम आपस में लड़ते हैं।

(ग) एक गीतों की पुस्तक चाहिए।

उत्तर : गीतों की एक पुस्तक चाहिए।

(घ) हम आपसे कहे थे।

उत्तर : हमने आपसे कहा था।

प्र. 7. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए : 1+1=2

1. आँख लगना - नींद आना

   बड़ी मुश्किल से अब उसकी आँख लगी है।

2. घुटने टेकना - हार मान लेना

   मुश्किलें आने पर हमें घुटने नहीं टेकने चाहिए।

खण्ड ग

प्र. 8 अ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2+2+1=5

(क) बाजार के चौराहे पर खामोशी क्यों थी?

उत्तर : बाज़ार में इंस्पेक्टर ओचुमेलाँव और उनका सिपाही गश्त लगा रहे थे वे किसी का भी सामान जब्त कर लेते थे साथ ही उस समय खरीदारों की कमी के कारण भी बाज़ार के चौराहे पर ख़ामोशी थी।

(ख) तताँरा ने वामीरो से क्या याचना की?

उत्तर : तताँरा वामीरो के रूप और मधुर आवाज़ से सम्मोहित हो गया था। गाँव की रीति की परवाह किए बिना उसने अगले दिन फिर लपाती गाँव की उसी समुद्री चट्टान पर आने की याचना की।

(ग) प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट किसे कहते हैं?

उत्तर : प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट उन्हें कहते हैं जो आदर्शों को व्यवहारिकता के साथ प्रस्तुत करते हैं।

प्र. 8 ब 'गिन्नी का सोना' के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि 'आदर्शवादिता' और 'व्यावहारिकता' इनमें से जीवन में किसका महत्त्व है? 5

गिन्नी का सोना पाठ के आधार पर यह स्पष्ट है कि जीवन में आदर्शवादिता का ही अधिक महत्त्व है अवसरवादी व्यक्ति सदा अपना हित देखता है। वह प्रत्येक कार्य अपना लाभ-हानि देखकर ही करता है। आज भी समाज के पास जो भी मूल्य हैं वे सब आदर्शवादी द्वारा ही दिए गए हैं। अत: जीवन में आदर्श के साथ सही व्यावहारिकता के मिश्रण का ही महत्त्व है।

प्र. 9 अ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2+2+1=5

(क) बिहारी कवि ने सभी की उपस्थिति में भी कैसे बात की जा सकती है, इसका वर्णन किस प्रकार किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : बिहारी ने बताया है कि घर में सबकी उपस्थिति में नायक और नायिका इशारों में अपने मन की बात करते हैं। नायक ने सबकी उपस्थिति में नायिका को इशारा किया। नायिका ने इशारे से मना किया। नायिका के मना करने के तरीके पर नायक रीझ गया। इस रीझ पर नायिका खीज उठी। दोनों के नेत्र मिल जाने पर आँखों में प्रेम स्वीकृति का भाव आता है। इस पर नायक प्रसन्न हो जाता है और नायिका की आँखों में लजा जाती है।

(ख) कंपनी बाग में रखी तोप क्या सीख देती है?

उत्तर : कंपनी बाग में रखी तोप यह शिक्षा देती है कि अत्याचारी शक्ति चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, पर उसका अंत अवश्य होता है। मानव विरोध के सामने उसे हार माननी पड़ती है। किस प्रकार अंग्रेज़ों ने अत्याचार किए पर अंत में भारत को छोड़ना ही पड़ा। यह तोप हमें बताती है कि कोई कितना शक्तिशाली क्यों न हो, एक-न-एक दिन उसे धराशायी होना ही पड़ता है। तोप की तरह चुप होना ही पड़ता है।

(ग) कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है?

उत्तर : कवि करुणामय ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है कि उसे जीवन की विपदाओं से दूर चाहे ना रखे पर इतनी शक्ति दे कि इन मुश्किलों पर विजय पा सके। दुखों में भी ईश्वर को न भूले,उसका विश्वास अटल रहे।

प्र. 9 ब 'सहस दृग-सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा? 5

उत्तर : कवि ने इस पद का प्रयोग सजीव चित्रण करने के लिए किया है। 'सहस्र दृग-सुमन' का अर्थ है - हजारों पुष्प रूपी आँखें। कवि ने इसका प्रयोग पर्वत पर खिले फूलों के लिए किया है। वर्षाकाल में पर्वतीय भाग में हजारों की संख्या में पुष्प खिले रहते हैं। कवि ने इन पुष्पों में पर्वत की आँखों की कल्पना की है। ऐसा लगता है मानों पर्वत अपने सुंदर नेत्रों से प्रकृति की छटा को निहार रहा है।

प्र. 10. टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। बताइए – ज़हीन होने के बावजूद भी कक्षा में दो बार फ़ेल होने के क्या कारण थे? 5

उत्तर : ज़हीन होने के बावजूद भी कक्षा में दो बार फ़ेल होने के निम्न कारण थे -

1. जब भी वह पढ़ने बैठता मुन्नी बाबू को कोई न कोई काम निकल आता या रामदुलारी कोई ऐसी चीज़ मँगवाती जो नौकर से नहीं मँगवाई जा सकती। जिससे उसे पढ़ने के लिए समय ही नहीं मिल पाता था। इस तरह वह फेल हो गया।
2. दूसरे साल उसे मियादी (टाइफाइड) बुखार हो गया था और पेपर नहीं दे पाया इसलिए फ़ेल हो गया था।

खण्ड घ

प्र. 11. दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए : 5

मित्रता

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में हर व्यक्ति के अनेक संबंध होते हैं। परस्पर सहयोग से रहना मानव का स्वभाव है। उसका सही स्वभाव मित्रता को जन्म देता है।

मित्रता एक अनमोल धन है। आज के युग में युग में सच्चा मित्र पाना स्वर्ग को पा लेने के समान है। सच्चा मित्र वह होता है, जो हमें अच्छे व बुरे का अहसास करवाए, साथ ही हमें कुमार्ग से सुमार्ग पर ले जाए। मित्रता में वह शक्ति है, जो बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान कर सकती है। मित्रता में मनुष्य एक-दूसरे का साथ देता है।

हर व्यक्ति को मित्र की आवश्यकता होती है। वह अपने दिल की हर बात निर्भयता से केवल अपने मित्र से कह सकता है। सच्चा मित्र अपने मित्र के सुख-दुख को अपना सुख-दुख मानता है।

रहीम जी ने कहा है -

"कह रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत
बिपत्ति-कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।"

अंग्रेजी कहावत के अनुसार सच्चा मित्र वही है, जो समय पर काम आए। कृष्ण-सुदामा की मित्रता नि:स्वार्थ एवं पवित्र थी। यह सच्ची मित्रता का अनुपम उदाहरण है।

हमें चाहिए कि जब भी किसी को अपना मित्र बनाए तो सोच-विचार कर बनाए क्योंकि जहाँ एक सच्चा मित्र आपका साथ देकर आपको ऊँचाई तक पहुँचा सकता है, वहीं कपटी मित्र अपने स्वार्थ के लिए आपको पतन के रास्ते पर ले जाता है।

संत कबीर कहते हैं कि -

"कपटी मित्र न कीजिए, पेट पैठि बुधि लेत।
आगे राह दिखाय के, पीछे धक्का देति।।"

कपटी आदमी से मित्रता कभी न कीजिए क्योंकि वह पहले पेट में घुस कर सभी भेद जान लेता है और फिर आगे की राह दिखाकर पीछे से धक्का देता है।

'कबीर तहां न जाईय, जहां न चोखा चीत।
परपूटा औगुन घना, मुहड़े ऊपर मीत।'

ऐसे व्यक्ति या समूह के पास ही न जायें जिनमें निर्मल चित्त का अभाव हो। ऐसे व्यक्ति सामने मित्र बनते हैं पर पीठ पीछे अवगुणों का बखान कर बदनाम करते हैं।

अत: मित्र का सही चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए,क्योंकि सच्चा मित्र हमारी सफलता की कुँजी होता है।

खेलों का महत्त्व तथा खेलों में फैला भ्रष्टाचार

आज संसार में अनेक प्रकार के खेल प्रचलित हैं। इनमें कबड्डी, हॉकी, फुटबॉल, बेसबॉल, रगबी, टेनिस, बास्केटबॉल, बैडमिंटन, आदि हैं। सभी को अपनी-अपनी रुचि के अनुसार इनमें से कोई न कोई खेल पसंद है। मुझे क्रिकेट का खेल सर्वाधिक पसंद है।

मनुष्य के जीवन में आरंभ से ही खेलों का महत्त्व रहा है। खेलों के बिना मनुष्य अधूरा है। प्राचीन समय में तो उसके मनोरंजन का साधन ही खेल हुआ करते थे।

शरीर को स्वस्थ रखने का एक साधन खेल भी है। आज खेल शिक्षा का आवश्यक अंग समझा जाने लगा है। शारीरिक शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सहायक है।

मनुष्य के व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास में खेल-कूद की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। खेलों से स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न होती हैं जो समाज को जोड़ने में अपनी भूमिका निभाते हैं।

भ्रष्टाचार अर्थात् भ्रष्ट + आचार। भ्रष्ट यानी बुरा या बिगड़ा हुआ तथा आचार का मतलब है आचरण। अर्थात् भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है भ्रष्ट किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो। आज भारत में ऐसे कई व्यक्ति मौजूद हैं जो भ्रष्टाचारी है।

आज हम अपने चारों ओर भ्रष्टाचार के अनेक रुप देख सकते हैं जैसे रिश्वत, काला-बाजारी जान-बूझकर दाम बढ़ाना, पैसा लेकर काम करना सस्ता सामान लाकर महँगा बेचना आदि। आज सरकारी व गैरसरकारी विभाग से लेकर शिक्षा के मंदिर माने जाने वाले स्कूल व कॉलेज भी इस भ्रष्टाचार से अछूते नहीं है। भ्रष्टाचार हमारे नैतिक जीवन मूल्यों पर सबसे बड़ा प्रहार है।

आज खेल में भी भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।खिलाड़ियों को टीम में लेने के लिए भी पैसे लिए जाते है। पैसे लेकर खिलाड़ी अपना ईमान बेच देते है। इसकी देश पर बुरा असर पड़ता है।

प्र.12. छात्रावास में रहने वाली अपनी छोटी बहन को फैशन की ओर अधिक रुझान न रख, ध्यानपूर्वक पढ़ाई करने की सीख देते हुए पत्र लिखिए। 5

बी.3,
आदर्श नगर,
दिल्ली।

प्रिय बहन हेमा,

तुम्हारा पत्र मिला पढ़कर बहुत दुख हुआ कि तुम्हे इस परीक्षा में केवल 60 अंक मिले है। माँ बता रही थी कि तुम्हारा ध्यान फैशन में बहुत ज्यादा लगा रहता है। मैं फैशन के खिलाफ नहीं परंतु अगर वह आपकी पढ़ाई और भविष्य के बीच में आए तो, अवश्य हूँ।

अपनी दिनचर्या नियमित करो और हर क्षण अपने लक्ष्य पर दृष्टि रखो। तुम्हें ज्ञात होगा कि जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, उन्होंने अपने जीवन के एक क्षण को भी व्यर्थ नहीं जाने दिया। यदि तुम एकाग्र मन से नहीं पढ़ोगी, तो परीक्षा में असफल होने के कारण तुम्हारा भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। अपना ध्यान पढ़ाई में लगाओ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम पढ़ाई का मूल्य समझोगी। माता जी और पिता जी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारी बहन,
सीमा।
दिनांक -x-x-20xx

प्र. 13. आपकी स्कूल ने उदयपुर की सैर का आयोजन किया है। विद्यार्थियों तक इसकी जानकारी देने के लिए एक सूचना-पत्र लिखिए। 5

सूचना

उदयपुर की सैर

महर्षि स्कूल, गुजरात

15 फरवरी, 20 _ _

सभी विद्यार्थियों को यह सूचित किया जा रहा है। यात्रा से संबंधित जानकारी इस प्रकार है -

दिनांक : 20 अप्रैल से 28 अप्रैल

मूल्य : रु. 7,000/- प्रति विद्यार्थी

योजना : प्रचलित स्थानों पर जाना तथा अन्य आकर्षक एवं मनोरंजक गतिविधियाँ।

इच्छुक 20 फरवरी 20 _ _ तक अपने नाम कक्षा अध्यापिका को दे दें।

अध्यक्ष

विद्यार्थी परिषद

प्र. 14. मकान मालिक और किरायेदार के बीच हो रहा संवाद लिखिए। 5

मकान मालिक : कैसे हो?

किरायेदार : जी ठीक।

मकान मालिक : महीने की दस तारीख हो गई तुम किराया देने नहीं आए तो मैंने सोचा मैं ही चलकर देख लूँ।

किरायेदार : माफ़ करना इस बार समय से आपका किराया नहीं दे पाया।

मकान मालिक : आज मिलेंगा क्या?

किरायेदार : नहीं साहब। माफ़ करना आज भी नहीं दे पाउँगा।

मकान मालिक : क्या बात हो गई?

किरायेदार : मेरे गाँव से माँ का खत आया था कुछ आवश्यक काम के लिए पैसे चाहिए थे तो मना नहीं कर पाया।

मकान मालिक : अब किराये का क्या?

किरायेदार : जी मुझे दो दिन का समय दीजिए मैं आपके घर आकर दे दूँगा।

मकान मालिक : ठीक है, आज तक तो तुम हमेशा समय से ही किराया देते रहे हो तो दो दिन रुक जाता हूँ।

किरायेदार : धन्यवाद।

प्र. 15. निम्नलिखित विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए : 5

गर्मी में इस्तमाल होनेवाले टेलकम पाउडर का विज्ञापन तैयार कीजिए।

गुलमहोर पाउडर
गर्मी की कर दे छुट्टी
गुलमहोर की ठंडक ऐसी